

Dharmendra GoelProfessor Emeritus
Philosophy Department
Panjab University Chandigarh-160014Dated 20.8.2022

प्रिय श्री रवी मित्रल जी,

बुद्धे आपके प्रकाशित 'काव्यी भरणानुक्ति' की प्रति आपके सदाकात्र से दीदी मिल गई थी। मैंने आपके प्रकाशित की धार्मिक आस्था को सख्ती से मरसक प्रशंस किया। मैं आग्रह करूँ और विश्लेषण में आधार गति व्युत्पत्ता है फिर भी धर्म निरंतर से अज्ञान भी नहीं है।

इस प्रकार की पहली तरह आज के युवावर्ग में धर्म की प्रति पुनः लौटने में अक्षय होगी। आपके प्रयास और बर्बाद धर्म की विलक्षण प्रतिभा से आस्था मिलेगी, ऐसा मुझे लगता है। आपके प्रयास की सराहना के साथ —

हाथों स्नेहानंदी

धर्मेश